भारतीय शास्त्रीय व उपशास्त्रीय संगीत में बहुमुखी प्रतिभावान कलाकार अमीर खुसरो का योगदान

ऋचा वर्मा
शोधार्थी (संगीत विभाग)
महात्मा ज्योतिबा फुले
रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली
ईमेलः*richaverma220500@gmail.com*

प्रो0 प्रवीन सैनी
शोध निर्देशिका
संगीत विभाग
गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स महाविद्यालय
मुरादाबाद
ईमेलः *dr.praveensainip@gmail.com*

Reference to this paper should be made as follows:
Received: 20.04.2025
Approved: 10.06.2025

ऋचा वर्मा
प्रो0 प्रवीन सैनी

भारतीय शास्त्रीय व उपशास्त्रीय संगीत में बहुमुखी प्रतिभावान कलाकार अमीर खुसरो को योगदान
Artistic Narration 2025, Vol. XVI, No. 1, Article No.08 pp. 058-063

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-june-2025-vol-xvi-no1
Referred by:
DOI:*https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.008*

सारांश

पुष्प मुरझा जाता है किंतु उसकी सुगंध वातावरण को गमकाती रहती है। गीत गाया जा चुका होता है किन्तु उसकी स्वरलहरी आकाश मण्डल में गूँजती रहती है। सुहावनी विभावरी तारामण्डल को अपने अंग में समेटकर लुप्त हो जाती है किन्तु ओस रूपी मुक्ता कण पृथ्वी की तष्णा को शान्त करते रहते हैं। उसी प्रकार मनुष्य चला जाता है किसी अज्ञात अनंत की ओर, रह जाती हैं तो मात्र उसकी स्मृतियाँ। हृदय रो उठता है किन्तु बुद्धि समझाती है कि जो जन्मा है, वह मरेगा अवश्य। वास्तव में मनुष्य के कार्य ही उसे महान बनाते हैं। इसी प्रकार संगीत जगत के महान संगीतज्ञ हजरत अमीर खुसरो साहब का संगीत में जो अमूल्य योगदान है उसे भुलाया नहीं जा सकता। भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं उपशास्त्रीय संगीत दोनों में ही अमीर खुसरों साहब ने जो नवीन रचनाएँ तथा अविष्कार किए हैं उसने संगीत कला को बुलन्दियों के शिखर पर पहुंचाया है। वास्तव में इनका सांगीतिक योगदान अविस्मरणीय रहेगा। संगीत के सौरमण्डलीय आकाश में वे सूर्य के समान प्रकाशमय रहेंगें।

https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.008

प्रस्तावना

हजरत अमीर खुसरो साहब का जन्म सन् 1253 ई० में एटा जिले के पटियाली नामक स्थान पर हुआ था। इनका आरंभिक नाम अबुल हसन था। इनके पिता अमीर मुहम्मद सैफुद्दीन, तत्कालीन शासक ग्यासुद्दीन बलवन की सेवा में थे। पिता की मृत्यु के पश्चात खुसरो को भी वही आश्रय मिला। बचपन से ही खुसरो बहुत चतुर और बुद्धिमान थे। खुसरो बाल्यकाल से ही रचनाएं करने लगे थे। खुसरो का जीवनकाल स्वंय में ही एक इतिहास है, इन्होंने अपने सामने ही दिल्ली के सिंहासन पर ग्यारह बादशाहों का शासनकाल देखा। इन्होंने अपने सामने गुलाम वंश और खिलजी वंश का उत्थान और पतन तथा तुगलक वंश का आरंभ देखा था। सुल्तान जलालुद्दीन फिरोजशाह ने इनकी योग्यता व विलक्षण प्रतिभा से प्रभावित होकर इन्हें 'अमीर' पदवी से विभूषित किया। तभी से यह अमीर खुसरो नाम से पुकारें जाने लगे।

अमीर खुसरो भारतीय संगीत के मध्यकालीन इतिहास के 13वीं व 14वीं सदी के सुप्रसिद्ध संगीतशास्त्री थे। संगीत के प्रति उनकी साधना, समर्पण एवं सृजनशीलता ने संगीत को उच्च शिखर पर पहुंचाया। इन्होंनें विभिन्न सांगीतिक शैलियों का, विभिन्न प्रकार के वाद्ययंत्रो का तथा विभिन्न रागों एवं तालों का सर्जन किया। साथ ही बहुत सी गद्य एवं काव्य रचनाओं के साथ–साथ सैंकड़ों राग–रागिनियों की रचना भी की। अमीर खुसरो ने हिंदुस्तानी प्रबंध, ध्रुवपद, छंद, दोहा, मांड, कवित्त के स्थान पर ख्याल, तराने, कौल , कल्बाना, गुल आदि विधाओं का प्रचलन किया।

खुसरो द्वारा रचित शास्त्रीय सांगीतिक शैलियां –

ख्याल: ख्याल फारसी भाषा का शब्द है। ख्याल शब्द का अर्थ है 'ध्यान' या 'कल्पना'। इसका संबंध उस सांगीतिक शैली से हैं जिसमें विचार अथवा विशिष्ट प्रकार की कल्पना का समावेश होता है। ख्याल का संबंध साधारणी गीति से है। विद्वज्जनों के मत अनुसार 14वीं सदी के महान संगीतशास्त्री अमीर खुसरो ने ख्याल शैली का बीजारोपण किया तथा 16वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में जौनपुर के बादषाह हुसैन शर्की ने ख्याल गायन शैली को अंकुरित किया। इसके पश्चात 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मौहम्मद शाह रंगीले के शासनकाल में ग्वालियर घराने के सुप्रसिद्ध गायक सदारंग और अदारंग के प्रयास से ख्याल गायकी ने एक विशाल फलित वृक्ष का रूप धारण कर लिया। वर्तमान में ख्याल को स्थाई और अंतरा दो भागों में गाया जाता है। इस गीत शैली में गायक द्वारा अपने विचार और कल्पना से भिन्न–भिन्न प्रकार के स्वर समुदायों को गीत के शब्दों के माध्यम से विभिन्न प्रकार से गाया जाता है। इस गायकी में मुख्यतः स्वरों की सुंदरता परिलक्षित होती है। ख्याल को भी दो प्रकार से गाया जाता है–विलंबित ख्याल तथा द्रुत ख्याल।

विलंबित ख्याल: विलंबित ख्याल को बड़ा ख्याल भी कहा जाता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार जौनपुर के शासक सुल्तान हुसैन शर्की द्वारा विलंबित ख्याल की रचना की गई थी। बड़ा ख्याल को विलम्बित लय में गया–बजाया जाता है तथा एकताल, झूमरा ताल, आड़ाचौताल, तिलवाड़ा ताल, झपताल आदि तालों द्वारा इसकी संगत की जाती है।

द्रुत ख्याल: द्रुत ख्याल को छोटा ख्याल भी कहा जाता है। छोटे ख्याल को मध्य लय में गाया–बजाया जाता है तथा इसके साथ तीनताल, झपताल, एकताल आदि तालों की संगत की जाती है ।

तराना: तराना गायन शैली भी अमीर खुसरो की ही देन है इसमें कुछ परिकल्पित एवं कुछ अर्थहीन जैसे नादिर, दिरदा, नीता, ताना, नोम, तोम, तन, तनन, देरे आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। कुछ

विद्वानों की मान्यतानुसार तराने के फारसी भाषा के शब्द अर्थपूर्ण होते हैं जैसे तू दानी अर्थात् तुम जानते हो , ओदानी अर्थात् वह जानता है तथा अली, अललूम, अलहिला, अला, लिल्ला आदि शब्द परमात्मा के लिए प्रयोग होते हैं, यह शब्द सार्थक व अर्थपूर्ण होते हैं।

इसके मुख्यतः स्थायी और अन्तरा दो भाग होते हैं। तराना गायकी को अधिकतर छोटे ख्याल के बाद प्रस्तुत किया जाता है जो चित्त को आनंदित कर देता है। इसमें शब्दों अथवा वर्णों को रुचिकर एंव चमत्कारिक रुप से प्रदर्शित किया जाता है। इसका गायन वादन अतिद्रुत लय में किया जाता है। इसके साथ मुख्यतः तीनताल, झपताल, एकताल, आड़ाचारताल आदि तालों की संगत की जाती है। मेवाती घराने के ख्याति प्राप्त कलाकार पं० जसराज के भतीजे व शार्गिद पं० रतन मोहन शर्मा जी वर्तमान में तराना गायन शैली के सुप्रसिद्ध कलाकार हैं।

खुसरो द्वारा रचित उपशास्त्रीय सांगीतिक शैलियां –

ग़ज़ल: ग़ज़ल अरबी भाषा का शब्द है। ग़ज़ल गायकी को प्रतिष्ठा दिलाने में अमीर खुसरो साहब ने अहम भूमिका निभाई। वर्तमान में ग़ज़ल, सुगम गीत के अन्तर्गत एक उत्कृष्टतम गीत शैली है। ग़ज़ल के पहले शेर को 'मतला' तथा अन्तिम शेर को 'मक्ता' कहते हैं। ग़ज़ल गायकी पहले राजदरबारों तथा महफिलों तक ही सीमित थी परन्तु आज इसका प्रयोग फिल्मी संगीत में भी किया जाता है। वर्तमान में ग़ज़ल गायकी सामान्य जनमानस में भी सुप्रसिद्ध है।

कव्वाली: सूफी परम्परा के अन्तर्गत ईश्वर के प्रति भक्ति भावना को परिलक्षित करने की प्राचीनतम शैली कव्वाली है। इस शैली के जनक होने के साथ–साथ इसके विकास में भी खुसरो साहब का महत्वपूर्ण योगदान है। यह जनमानस के मध्य बहुत लोकप्रिय शैली है। कव्वाली एक विशिष्ट प्रकार की शैली है इसमें बोलबांट, पल्टा, जमजमा आदि का प्रयोग किया जाता है तथा इस शैली के साथ दीपचंदी ताल, क़व्वाली ताल, दादरा आदि तालें प्रयुक्त की जाती हैं। खुसरो साहब ने क़व्वाली गायकी के अन्तर्गत कौल, नक्श, गुल, कल्बाना आदि नवीन शैलियों का भी वर्णन किया।

कौल: यह अरबी भाषा का शब्द है। जिसका अर्थ है– कथन, प्रण, प्रतिज्ञा, वचन या विशेष उक्ति। इस शैली में अरबी भाषा तथा फारसी भाषा के साथ तरानों के कुछ बोलों का प्रयोग भी होता है। इस शैली को मुख्यतः स्थायी और अन्तरा दो भागों में गाया जाता है। यह 'कव्वाली' नामक विशेष ताल में गाया–बजाया जाता है। इसमें गम्भीर प्रकृति के रागों के टुकड़ों का प्रयोग होता है।

कल्बाना: इस शैली का गायन अरबी भाषा और हिन्दी भाषा के शब्दों को मिलाकर किया जाता है। कौल और कल्बाना में यही अंतर है। कौल में अरबी, फारसी भाषा के शब्द, तराने के बोल शामिल होते हैं तथा कल्बाना में अरबी और हिंदी भाषा के शब्दों का मिश्रण होता है। कल्बाना में प्रत्येक टुकड़े के साथ ताल भी परिवर्तित होती है अर्थात् इसके अन्तर्गत अनेक तालों का प्रयोग किया जाता है। इस कारण इसे 'तालसागर' भी कहा जाता है। इसे भी स्थायी तथा अन्तरा दो भागों में गाया जाता है।

नक्श और गुल: इसके अविष्कार का श्रेय भी अमीर खुसरो को जाता है। इस शैली में फारसी शब्दों का प्रयोग होता है। नक्श का अर्थ है रूबाई अर्थात् जिस गीत में केवल एक शेर हो तथा गुल का तात्पर्य बैंत से है। फारसी भाषा के शब्दों में कहा जाए तो इन गीतों में गुल तथा गुलजार दृश्यों का वर्णन मिलता है। नक्श और गुल को अधिकतर पश्तो ताल तथा कव्वाली तालों में गाया–बजाया जाता है। इसके गीतों में बहार ऋतु के रागों का गायन प्रयुक्त होता है।

https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.008

नक्श निग़ार: इसके अन्तर्गत फारसी भाषा के शब्द मिलते हैं। नक्श निग़ार के गीतों में मल्हार के रागों का प्रयोग होता है।

बसीत: अमीर खुसरो द्वारा रचित यह शैली चतुरंग के समान है। बसीत और चतुरंग गीत शैली में अन्तर मात्र यह है कि चतुरंग के अन्तर्गत चार प्रकार के अंगों का ख्याल के प्रयुक्त बोल, सरगम, तराने के बोल, त्रिवट के बोल का मिश्रण होता है और बसीत के गीत में कई प्रकार के रागों का मिश्रण होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि बसीत गीत शैली के प्रत्येक टुकड़े में पृथक पृथक रागों की बन्दिशें होती हैं। इसलिए संगीतज्ञ इस शैली को 'राग सागर' नाम से भी सम्बोधित करते हैं।

मन्डहा: यह खुसरों द्वारा रचित ऐसी करुणामयी गीत शैली है जो पत्थर दिल को भी पिघला देने की क्षमता रखती है। इस गीत शैली को सदियों से महिलाओं के द्वारा दुल्हन की विदाई के समय गाया जाता है।

बसंत गीत: इसकी रचना का श्रेय भी महान सूफी कवि अमीर खुसरो को ही जाता है। सूफी परंपरा के अंतर्गत मुसलमान भी बसंत पंचमी मनाते हैं। इसके पीछे भी एक कारण हैं, ऐसा कहा जाता है कि हजरत निजामुद्दीन औलिया के प्रिय भांजे मौलाना तकीउद्दीन नूह का लम्बी बिमारी के बाद देहांत हो गया जिस कारण निजामुद्दीन साहब बड़े दुःखी रहा करते थे। अमीर खुसरो अपने गुरु की इस दशा को देखकर बहुत चिन्तित थे। उन्हीं दिनों बसंत मेला लगा हुआ था। जहां सभी लोग कालकाजी नामक मंदिर पर सरसों के फूल बरसाते हुए बड़ी तन्मयता के साथ गा–बजा रहे थे। यह अद्भुत दृश्य देखकर खुसरो साहब बहुत प्रभावित हुए तथा शीघ्र ही उन्होंने खेतों में से सरसों के फूल तोड़े, तिरछी पगड़ी बाँधी और झूमते गाते हुए वे अपने गुरु निजामुद्दीन औलिया के पास पहुँच गए। खुसरो के इस अंदाज को देखकर वह मुस्कुराने लगे और प्रसन्न हो गए। इसके पश्चात् उस दिन से आज तक प्रत्येक वर्ष माघ माह की पंचमी को 15 दिवसीय मेले का आयोजन किया जाता है। जिसमें लोग पीले वस्त्र धारण करते हैं। गायन, वादन और नृत्य कला की सभाएं आयोजित होती हैं तथा सूफी कव्वाल गायक बसंत गीत व कव्वाली गीत गाते हैं।

सावेला: अमीर खुसरों द्वारा रचित सावेला गीत शैली अत्यधिक मनोरंजक और आनन्दमयी शैली है। इस गीत शैली की संगति झपताल में मध्य लय में की जाती है जिसका काव्य का आधार ईश–वन्दना होता है।

सावन गीत: यह गीत सावन माह में गाया जाता है। इस माह में अत्यधिक वर्षा होने के फलस्वरुप धरती हरी–भरी हो जाती है। सावन गीतों में बहुत से अन्तरे होते हैं, यह गीत महिलाओं का गीत माना जाता है और सावन मास में इस गीत को महिलाएं झूला–झूलते हुए अपने प्रियतम की याद में गातीं हैं। खुसरो साहब ने सावन गीतों को सामान्य जनमानस में लोकप्रियता भी दिलवाई।

खुसरो द्वारा रचित नवीन राग एवं ताल रचना :

अमीर खुसरो द्वारा रचित तराना, ग़ज़ल, ख्याल, क़व्वाली आदि संगीत शैलियाँ आज भी अत्यधिक प्रचलित हैं। इसके अतिरिक्त अमीर खुसरो साहब ने नवीन रागों एवं तालों की भी रचना की। इनके द्वारा रचित राग इस प्रकार हैं –

साजगिरी, बाखरज, इश्शाक, मुव्वाफिक, गनम, रहावी, सनम, बागरू, वगैरह, फरोदस्त, जीलफ, सरपरदा, मुजीर या मुजीब, फरगना, इमन, जंगोला आदि रागों का आविष्कार किया। वर्तमान समय में उनके द्वारा रचित कुछ ही राग प्रचलित हैं। जिस प्रकार उन्होंने भिन्न–भिन्न प्रकार के रागों की रचना की उसी प्रकार उन्होंने रागों के साथ संगत के लिए प्रयोग होने वालीं विभिन्न तालों का आविष्कार भी किया जो निम्नवत हैं –

पश्तो ताल (7 मात्रायें), फरोदस्त ताल(14 मात्रायें), सवारी ताल(32 मात्रायें), झूमरा ताल (14 मात्रायें), दास्तान ताल(20 मात्रायें), जत ताल(8 मात्रायें), अद्धा तिताला ताल(8 मात्रायें), चपक ताल(7 मात्रायें), जनानी सवारी ताल, सुल्फाख्ता ताल, क़व्वाली ताल, पहलवान ताल, होरी ताल आदि विभिन्न तालों की रचना की।

खुसरो द्वारा अविष्कृत विभिन्न वाद्य:

विभिन्न सांगीतिक शैलियों, रागों एवं तालों के अतिरिक्त अमीर खुसरो ने विभिन्न वाद्ययंत्रों का भी आविष्कार किया। विद्वानों के मतानुसार खुसरो साहब द्वारा प्राचीन वाद्य पखावज को दो भागों में विभाजित कर तबला वाद्य का आविष्कार किया तथा पखावज को ही लघु रूप देकर 'ढोलक वाद्य' का आविष्कार किया गया। जिस प्रकार से खुसरो साहब ने पखवाज वाद्य से तबले और ढोलक वाद्य का आविष्कार किया उसी प्रकार वीणा वाद्य से 'सितार वाद्य' का भी आविष्कार किया।

खुसरो साहब कीं गद्य एवं काव्य रचनाएं :

खुसरो साहब ने गद्य एवं काव्य रचनाएं भी कीं। उनकी गद्य रचनाओं में एजाज़येखुसरवी, ख़ज़ाइनुलफ़तह तथा मिश्रित हैं। जिसमें 'मसनवी शहरअसुब', 'चिश्तान', 'वेदऊलअजाइब' और 'ख़ालितबारी' नामक रचनाएँ उल्लेखित हैं तथा उनकी काव्य रचनाएँ निम्नवत् हैं–

- छाप तिलक सब छीन्हीं रे मोसे नैना मिलाई के
- सकल बन फूल रही सरसों
- अम्मा मेरे बाबा को भेजो री
- तोरी सूरत के बलिहारी
- मेरे महबूब के घर रंग है री
- परदेसी बालम धन अकेली मेरा बिदेसी घर आवना
- ऐ री सखी मोरे पिया घर आए
- आ घिर आई दई मोरी घटा कारी
- बहोती रही बाबुल घर दुल्हन
- जो मैं जानती बिसरत हैं सैंय्या
- जब यार देखा नैन भर
- काहे को ब्याहे बिदेस
- पिया आवन कह गए अजहूँ न आए

आदि काव्य रचनाएँ इनके द्वारा ही रचित है जो आज भी बहुत प्रचलित है तथा कलाकारों द्वारा विभिन्न प्रकार से गायीं जाती हैं। जिसके श्रवण से श्रोतागण आनन्दमयी हो जाते हैं।

इस प्रकार इनकी सांगीतिक सेवाओं व रचनाओं ने संगीत जगत को एक नवीन स्वरूप प्रदान किया। इन्होंने संगीत को सामान्य जनमानस तक पहुंचाया तथा उनके मध्य संगीत के माध्यम से परमात्मा की स्तुति का मार्ग प्रशस्त किया। खुसरो साहब बहुमुखी प्रतिभा के धनी, गायन वादन में निपुण, एक कुशल साहित्यकार, एक अच्छे राजनीतिज्ञ, राजकवि, राजगायक, राज–काज और युद्धकला के ज्ञाता एवं उच्चकोटि के कलाकार थे। भारतीय संगीत में हजरत अमीर खुसरो साहब का नाम स्वर्णिम अक्षरों में लिखा हुआ है।

https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.008

सन्दर्भ

1. डॉ सुनील गोस्वामी, ''सूफी संगीत राग परम्परा के सन्दर्भ में'', पृष्ठ–77,78.
2. उस्ताद चाँद खाँ, ''मुसिकी हजरत अमीर खुसरो'', पृष्ठ–245,246,248.
3. डॉ स्वतंत्र शर्मा, ''पाश्चात्य स्वरलिपि पद्धति एंव भारतीय संगीत'', पृष्ठ–315,316.
4. संगीत पत्रिका, क़व्वाली अंक, पृष्ठ–531.
5. इन्टरनेट से प्राप्त जानकारी के अनुसार
6. https://m.bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%85%E0%A4%AE%E0%A5%80%E0%A4%B0%E0%A4%96%E0%A4%BC%E0%A5%81%E0%A4%B8%E0%A4%B0%E0%A5%8B